सरकस

सरकस

बच्चो, जो कुछ देख रहे हो, इसे न क्या तुम
जान गये?
यह तो अरे, खिलौना सरकस, इसे न क्या
पहचान गये?
सजे-धजे ये दोनों बन्दर
ढोल बजायेंगे अब डटकर
और जानते हो तब झटपट, कौन निकल
आये बाहर?

दुम के बल पर लटक लटक कर,
करतब यह लंगूर दिखाता
यह अफ़्रीका से आया है,
ख़ूब सभी का मन बहलाता।
क़द तो इसका छोटा है पर
पूँछ बड़ी है इसकी गज़ भर
जितना ख़ुद भी बड़ा नहीं है,
पूँछ कहीं है उससे बढ़कर।

देख रहे हो अब तुम जिसको,
यह तो है बुद्धू तोता
अपने को बुद्धू कह कहकर
यह तो खुद ही खुश होता।
पर यह तो है तोता प्यारा
सुग्गा, यह औरों से न्यारा
यह तो नहीं ज़रा भी बुद्धू
बस, भोला-भाला बेचारा।
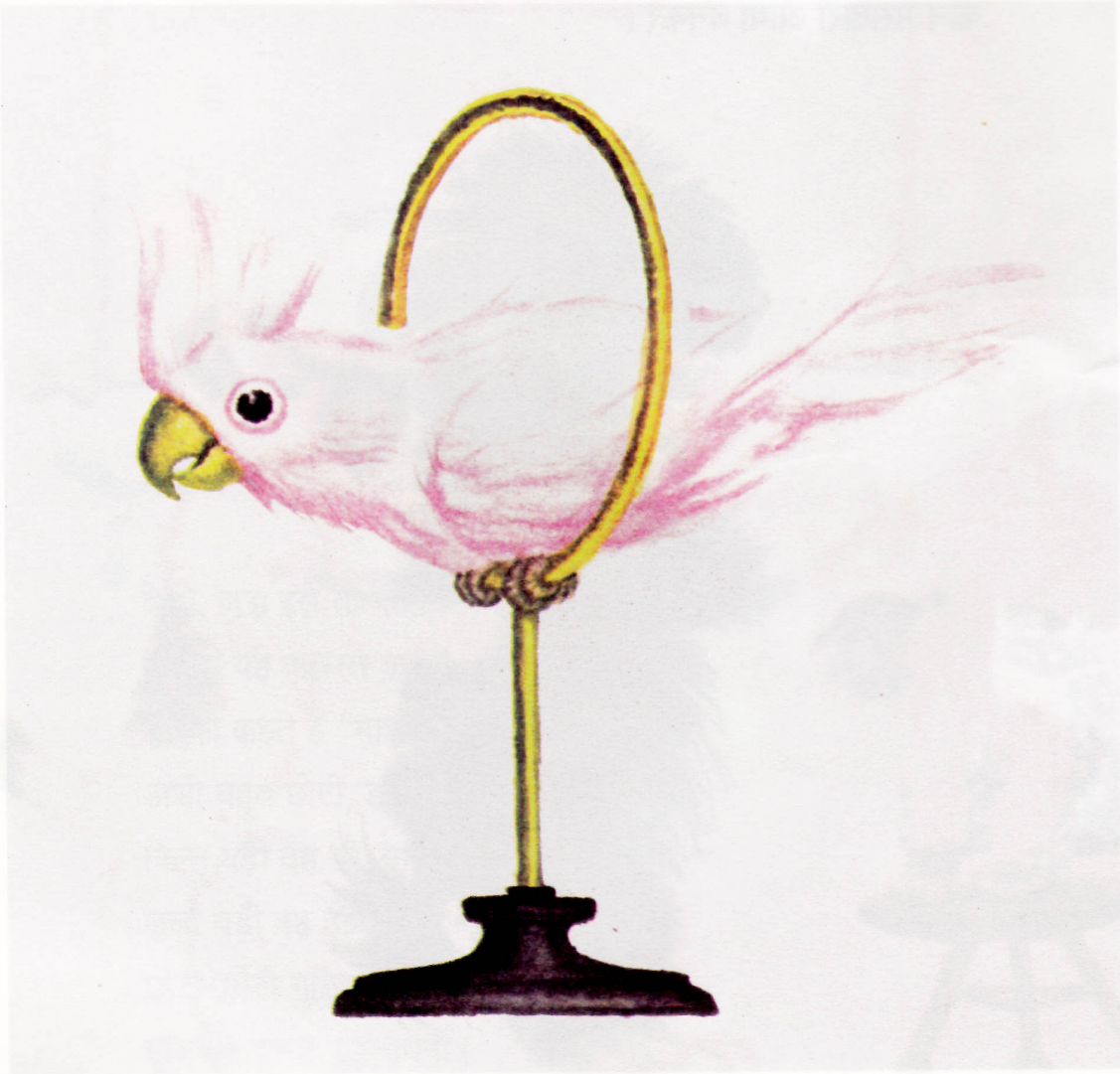
आया अब मसखरा सामने
क्या इसको पहचान गये?

बिल्लाराम इसे कहते हैं,
क्या तुम उसको जान गये?
कुत्तों के सम्मुख आने पर,
वह तन जाता ऐसे झुककर
फ़ौरन हमें पता चल जाता
कौन मसखरा आया बनकर।

देखो, ज़रा इसे तो देखो,
गुड़िया यह कसरत करती
उसको कहते हैं "मात्र्योश्का",
अभी बहुत छोटी, डरती।
किन्तु घड़ी वह भी आयेगी
जल्द बड़ी वह हो जायेगी
छोटी-छोटी गुड़ियों की तब
खुद भी अम्मा कहलायेगी।

बिल्कुल जीवित सा लगता है,
गधा हमारा यह सुन्दर
वह प्रणाम भी कर सकता है,
शीश झुकाकर, झुक झुक कर
"मित्र हमारे, कानोंवाले
नमस्कार! ओ भोले-भाले!"
सुनते ही उत्तर में झटपट
वह भी अपना शीश झुका ले।

ज़ीन कसा है इस पर सुन्दर,
घोड़ा सजा-सजाया है
अपना हुनर दिखाने को वह
भी सरकस में आया है।
इसको तो तुम हाथ लगाओ
फिर तो बस, अचरज में आओ
पक्षी से भी तेज़-तेज़ तुम
इसको तो उड़ते ही पाओ!

लो, अब ये दो भालू आये,
जो बढ़िया करते कसरत
उछलें-कूदें, दौड़ें-भागें,
इन्हें नाचने की हसरत।
अभी नाच का रंग जमेगा,
हर भालू ही ख़ूब रमेगा
बहुत देर तक इन दोनों का
नाच-रंग अब नहीं थमेगा।

यह है काँटोवाली साही,
जादूगरनी और मदारी
आँखों में यों धूल झोंकती,
अक़्ल न देती साथ हमारी।
काँटों में सब सेब फँसाती
चुपके से बिल में घुस आती
कैसी है यह ढीठ कि इसको
शर्म न रत्ती भर भी आती।

यह देखो, यह टैक्सी आई,
कौन बैठकर इस पर जाये?
चालक-पहिया कौन सम्भाले,
इस टैक्सी को कौन चलाये?
सरकस की बन्दरिया इस पर
बैठी है कैसी सज-धज कर
घुँघराले बालों का कुत्ता,
बना हुआ है इसका ड्राइवर।

छोटा-सा मख़मल का हाथी,
यह छोटा, पर ताक़तवर है
बड़ों-बड़ों से यह भिड़ जाये
बड़ा बहादुर और निडर है।
अभी नहीं वह पहुँचा सौ पर
कुछ सालों में वह खा पीकर
कुछ-कुछ और बड़ा हो जाये
शायद धीरे-धीरे बढ़कर।

सभी खिलौनों को लेकर हम,
अब बस, इनको चाबी देंगे
उछलें-कूदेंगे, तब मेंढक,
खरहे अपना मज़ा करेंगे।
बकरा और भेड़ तब मिलकर
ढोल बजायेंगे यह डटकर
सभी खिलौने एक साथ ही, नाच
दिखायेंगे तब मिलकर।